Semester 1 MSc - 2025 - 2027.

Cannons' Theory - कैनन सिद्धान्त - कैनन बार्ड सिद्धान्त
आपात सिद्धान्त, हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त भी कहलाता है।
सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं में
हाइपोथैलेमस की मुख्य रूप से काम आता है। यह
सिद्धान्त के अनुसार वृहद् मस्तिष्क संवेगात्मक प्रदर्शन
की केन्द्र है। जिसके दो भाग है। हाइपोथैलेमस और
थैलेमस उत्तेजना संवेदनाओं से प्रभावित करती है।
जिससे स्नायु प्रवाह संवाहक नाड़ियों से होकर
थैलेमस में पहुँचता है। थैलेमस यह स्नायु-प्रवाह में
संवेगात्मक रूप जोड़कर उसको वृहद् मस्तिष्क में भेज
देता है। जिससे व्यक्ति विशेष में संवेग की अनुभव
उत्पन्न होता है। स्नायु प्रवाह के वृहद् मस्तिष्क में
भेजते समय थैलेमस उसके कुछ भाग को आंतर तथा
स्केलिटल माँसपेशियों की ओर मोड़ देते है।
इससे इनकी क्रियाओं में परिवर्तन हो जाते है।
जेम्स लांज के सिद्धान्त से कैनन का सिद्धान्त अधिक
उपयुक्त है। संवेग के नियंत्रण में हाइपोथैलेमस की
हाथ रहता है। यह सिद्धान्त के मानने से यह
भी समझ में आ जाता है कि सुषुम्ना नाड़ी के
काट देने अथवा आंतर की मंद प्रतिक्रियाओं से
संवेग पर प्रभाव क्यों नहीं पड़ता और एड्रिनल
ग्रन्थि के स्राव की इन्जेक्शन देने से संवेग
क्यों नहीं उत्पन्न होते परन्तु यह मत सीमित
और एकांगी है। जैसे कि - लैश्ले ने अपने
प्रयोगों में दिखलाया है। कैनन सिद्धान्त के साथ संवेग
के सभी पहलुओं की व्याख्या नहीं की जा सकती
वास्तव में संवेगों में हाइपोथैलेमस के अतिरिक्त
स्नायु-संस्थान के अन्य भागों की भी हाथ रहता है।

संवेगों की अभियोजनशीलता (Adjustability) में हाइपोथैलेमस की अपेक्षा वृहद् मस्तिष्क का अधिक भाग रहता है। जेम्स लांज एवं कैनन के सिद्धांत की पूर्ण स्वीकृति न होते हुए लीपर ने भी एक सिद्धान्त का प्रस्तुतिकरण किया, यहाँ इस सन्दर्भ में प्रेरणा सिद्धान्त एवं सक्रियकरण का सिद्धान्त समझ लेना अति उत्तम होगा।

शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबल संवेगात्मक अनुभव आसपास के वातावरण से उपजे संकेतों के संदर्भ में वर्तमान मानसिक स्थिति की सचेत व्याख्या का परिणाम होते हैं। शारीरिक उत्तेजना और संज्ञानात्मक लेबलिंग संवेगात्मक अनुभव से पहले लेकिन एक ही समय में होते हैं।

जब दिल तेजी से धड़कता है तो उस स्थिति में हम उत्तेजित भयभीत या क्रोधित होते हैं। यह एक शारीरिक उत्तेजित अवस्था होती है। मस्तिष्क बाहरी परिवेश से मिलने वाले संकेतों को ध्यान में रखते हुए इस स्थिति की व्याख्या करता है। सुझाव दिया है कि संवेगात्मक अनुभव के लिए उत्तेजित अवस्था की सचेत व्याख्या की जरूरत होती है। एक व्यक्ति गुस्सैल व्यक्ति के सामने आता है तो उसमें शारीरिक उत्तेजना बढ़ी हुई - धड़कन श्वसन दर में वृद्धि, पुतलियों का फैलना आदि के साथ साथ तुरन्त यह विचार आता है कि यह डरावना होना चाहिए। उन्होंने अपनी शारीरिक उत्तेजना को क्रोध के रूप में लेबल किया और इस क्रम में स्वयं को परिपक्व व्यवहार किया। गलत और शारीरिक परिवर्तनों का संज्ञानात्मक नामकरण करता है।